Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

विभाजन के आईने में झूठा-सच

Bhaskar Mishra*

Research Scholar, Visva Bharati University, West Bengal

सार – *भारत-पाकिस्तान विभाजन भारतीय राज्य के इतिहास का वह अध्याय है जो एक विराट त्रासदी के रूप में अनेक भारतीयों के मन पर आज भी जस-की-तस अंकित है। अपनी जमीनों-घरों से विस्थापित, असंख्य लोग जब नक्शे में खींच दी गई एक रेखा के इधर और उधर की यात्रा पर निकल पड़े थे। यह न सिर्फ मनुष्य के जीवट की बल्कि भारतवर्ष के उन शाश्वत मूल्यों की भी परीक्षा थी जिनके दम पर सदियों से हमारी हस्ती मिटती नहीं थी। यशपाल का यह कालजयी उपन्यास उसी ऐतिहासिक कालखंड का महाआख्यान है। स्वयं यशपाल के शब्दों में यह इतिहास नहीं है, 'कथानक में कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ अथवा प्रसंग अवश्य हैं परन्तु सम्पूर्ण कथानक कल्पना के आधार पर उपन्यास है, इतिहास नहीं।' अर्थात् यह उस जिन्दगी का आख्यान है जो अक्सर इतिहास के स्थूल ब्यौरों में कहीं खो जाती है। 'झूठा सच' के इस पहले खंड 'वतन और देश' में विभाजन के दौरान हुई लूट-पाट और हिंसा के रोंगटे खड़े कर देनेवाले माहौल और उस भीतरी विभाजन का यथार्थवादी अंकन किया गया है जिसके चलते वतन और देश दो अलग-अलग इकाइयाँ हो गए। उपन्यास यह भी जानने की कोशिश करता है कि इसके कारण क्या थे - अंग्रेजों की चाल, साम्प्रदायिकता, पिछड़ापन या आर्थिक विषमता या यह सब एक साथ।*

----------X----------

परिचय

यह उपन्यास दो भागों में विभाजित है। इसका पहला भाग 'वतन और देश' 1958 ई० में विप्लव कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ और दूसरे भाग 'देश का भविष्य' का प्रकाशन 1960 ई० में हुआ। इसके पहले भाग में लाहौर के भोला पांधे की गली के परिवारों के बहाने जन सामान्य के जीवन का चित्रण करते हुए देश के विभाजन एवं उससे उत्पन्न भीषण सांप्रदायिक दंगे आदि का चित्रण करते हुए शरणार्थियों के एक देश छोड़कर दूसरे में पलायन की विवशता तक का चित्रण किया गया है। दूसरे भाग में देश के निर्माण में होने वाली चूकों, नेताओं की भ्रष्टता, क्रांतिशील चेतना के भटकाव, स्वार्थ लिप्सा की ट्रेजेडी में फँसा मध्यवर्ग और इस सब के बावजूद जनता की निर्णायक विजयिनी शक्ति का सांकेतिक चित्रण विस्तृत फलक पर किया गया है।

झूठा सच के प्रमुख पात्र हैं जयदेव पुरी, उसकी बहन तारा और जयदेव पुरी की पत्नी कनक। तारा और जयदेव पुरी का एक परिवार है, कनक का दूसरा परिवार है। इन दोनों परिवार की कहानियों के माध्यम से उपन्यास की कहानी आगे बढ़ती है और अत्यधिक विस्तार में जाकर बहुआयामी हो जाती है।

झूठा सच की कहानी सन् 1947 में भारत की आजादी के समय मचे भयंकर दंगे की पृष्ठभूमि के रूप में बुनी गयी है। ब्रिटिश औपनिवेशिकता, उसकी 'फूट डालो और राज करो' की नीति तथा मुस्लिम लीग के 'दो राष्ट्र का सिद्धांत' से मिलकर बृहत्तर भारतीय समाज में स्वतः मौजूद छुआछूत की निम्न भावना एवं सांप्रदायिकता की दबी चेतना ऐसी उभरी कि पूरा भारत वर्ष ऐसी ज्वाला से धधक उठा जिसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिल पाता है।[1] मानवीय यातना के इतिहास में यह विश्व की क्रूरतम घटनाओं में से एक घटना मानी जाएगी। लगभग एक दशक (1946 से 56 तक) इस उपद्रव का प्रभाव बना रहा।ख्2, तात्कालिक ही सही पर वहशी भावनाओं की गिरफ्त में आये हिंसक पशु बने मनुष्यों द्वारा सांप्रदायिक दंगों में हजारों-हजार व्यक्ति मौत के घाट उतार डाले गये, लाखों विस्थापित हो गये, स्त्रियों और बच्चों के साथ अमानुषिक अत्याचार किये गये और पूरे देश की एक विशाल जनसंख्या को अपना देश या वतन छोड़कर भारत या पाकिस्तान में नये सिरे से बसना पड़ा। झूठा सच के प्रथम भाग 'वतन और देश' में इन स्थितियों का अत्यंत मार्मिक एवं विस्तृत चित्रण किया गया है। इस भाग के अंत में शरणार्थियों को लेकर आने वाली एक बस का ड्राइवर कहता है ष्रब्ब ने जिन्हें एक बनाया था, रब्ब के बन्दों ने अपने वहम और जुल्म से उन्हें दो कर दिया गया है

www.ignited.in

अनुसंधान क्रियाविधि

डॉ. रामविलास शर्मा यशपाल के घोर विरोधी के रूप में माने जाते हैं, परंतु उन्होंने संभवतः सबसे पहले यह घोषित कर दिया था कि 'झूठा सच' यशपाल जी के उपन्यासों में सर्वश्रेष्ठ है। उसकी गिनती हिन्दी के नये-पुराने श्रेष्ठ उपन्यासों में होगी-- यह भी निश्चित है।

नेमिचंद्र जैन ने इस उपन्यास पर अनेक आरोप लगाते हुए यह निष्कर्ष दिया था कि हिन्दी उपन्यास साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण कृतियों में होने पर भी 'झूठा सच' अंततः किसी आत्यन्तिक सार्थक उपलब्धि के स्तर को छूने में असफल ही रह जाता है।

कवि कुँवर नारायण ने इस उपन्यास की समीक्षा ही 'कविदृष्टि का अभाव' शीर्षक से लिखी थी।इसके बरअक्स आनंद प्रकाश का स्पष्ट मत है कि इस उपन्यास का एक बहुत बड़ा गुण है इसकी रोचकता और अत्यधिक साहित्यिकता। ...निश्चय ही 'सामाजिक वातावरण' और 'ऐतिहासिक यथार्थ (यशपाल द्वारा प्रयुक्त शब्द) के बेबाक चित्रण को ज्यादातर सही साहित्यिक समझ और अभिव्यक्ति से जोड़ पाने में यशपाल को पर्याप्त सफलता मिली है।

शिवकुमार मिश्र के अनुसार 'झूठा सच' को पाठकों की व्यापक सराहना मिली। उस पर 'अखबारी कतरन होने के आरोप भी इधर-उधर से आये परन्तु रमेश कुंतल मेघ ने उसे 'कला जैसा लिखा गया इतिहास' कह कर उसकी रचनात्मक प्रकृति की सही पहचान की। इतने विशद पट पर, आधुनिक इतिहास की एक रचनात्मक घटना इतिहास से विलग कैसे रह सकेगी? यशपाल की खूबी है कि उन्होंने उस इतिहास को कला के अपने सौष्ठव से जोड़कर प्रस्तुत किया।

रामदरश मिश्र जी का मानना है कि बातें बहुत सी है किंतु मुझे लगता है कि लेखक ने तत्कालीन घटनाओं और परिस्थितियों के विस्तार तथा मानवीय अन्त सत्यों की गहनता, आधुनिक नियति और मूल्य का बहुत सुंदर सामंजस्य किया है। यह शिकायत की गयी है कि इस उपन्यास में लेखक की अपनी दृष्टि (यानी मार्क्सवादी दृष्टि) आर-पार व्यापत नहीं है किंतु मुझे लगता है कि यह लेखक की सर्जनात्मक दृष्टि के लिए शुभ लक्षण है कि वह यथार्थ के लोक की मुक्त यात्रा करती है, इसी पूर्वग्रह से आक्रांत नहीं है। यह रचनात्मक दृष्टि एक ओर लेखक को यथार्थ के सही स्वरूप को देखने के लिए प्रेरित करती है ,दूसरी ओर चूँकि यह सर्जन दृष्टि है, घटनाओं और तथ्यों को ज्यों-का-त्यों न देखकर उन्हें मानवीय सत्यों के संदर्भ में देखती है और उसके भीतर से कुछ निर्मित करती है। प्रस्तुत महाकाव्यात्मक उपन्यास में यशपाल की दृष्टि ने कहीं साथ नहीं छोड़ा है, वह आरपारदर्शी है और उसे इस बात की पहचान है कि क्या होकर भी झूठ है और क्या ना होकर भी सही है। लेखक मार्क्सवादी है किंतु इस उपन्यास में उसकी मार्क्सवादी विचारधारा अपने-आप में हावी न होकर उसकी कलात्मक दृष्टि की सहायक है।

मधुरेश ने झूठा सच उपन्यास में महाकाव्य शीर्षक से विस्तृत समीक्षात्मक आलेख लिखा और कुँवर नारायण जी के आरोपों का विश्लेषणात्मक उत्तर देते हुए घोषित किया कि 'झूठा सच' यशपाल की सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप में तो स्वीकृत है ही, वह हिन्दी के दस श्रेष्ठ और उल्लेखनीय उपन्यासों में से भी एक है।

उपसंहार

झूठा सच भारत विभाजन (1947) की पृष्ठभूमि पर केंद्रित वृहत्तर एवं बहुआयामी फलक वाला उपन्यास है। इसमें विभाजन के पहले से लेकर विभाजन के बाद तक के समय का बारीक चित्रांकन किया गया है। जयदेव पुरी एवं उसकी बहन तारा को केंद्र में रखने के बावजूद यह उपन्यास नायक या नायिका प्रधान नहीं है और इस रूप में भी यह उपन्यास पूर्व निर्मित बँधे-बँधाये औपन्यासिक ढाँचे को अतिक्रमितख्7, करता है। यह उपन्यास वस्तुतः विभिन्न धर्मों एवं वर्गों में बँटे वृहत्तर जन-समाज के उत्थान-पतन की सुविस्तीर्ण गाथा है, जिसका चित्रण विभाजन को केंद्र में रखते हुए किया गया है। विभाजन से पहले लोगों के मन में उत्पन्न होने वाले विघटनवादी भाव तथा विभाजन के बाद देश अथवा शासन के संघटन के लिए आवश्यक समर्पण एवं सूझबूझ में होने वाली कमी -- दोनों पर सूक्ष्म दृष्टि रखते हुए यशपाल ने इस उपन्यास का ताना बाना बुना है। सांप्रदायिक चेतना किस प्रकार मानवीय नियति को दूर तक प्रभावित करती है तथा परिस्थितियों की विकट मार जनसामान्य में निहित क्रांतिकारी चेतना को भी किस प्रकार कुंठित करते हुए स्वार्थ लिप्सा की ओर मोड़ सकती है, इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण यशपाल ने इस उपन्यास में किया है। भारत का मध्य वर्ग क्रांतिकारी चेतना से युक्त होकर पूंजीपति वर्ग के पाखंड की आलोचना करते हुए भी किस प्रकार स्वयं वैसा ही जीवन जीने की ट्रैजेडी की ओर बढ़ते जाता है, इसका औपन्यासिक रचाव देखने योग्य है।

उपन्यास का रचनात्मक गठन इतना कुशल है कि इस महाकाय उपन्यास की महाकाव्यात्मकता इस रहस्य में अंतर्निहित मानी गयी है कि इसके कथा-संघटन में यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि 'झूठा सच' तारा की नियति कथा

www.ignited.in

के बहाने देश के विभाजन का वृत्तांत है या कि देश विभाजन के परिणाम स्वरूप है तारा की नियति। 9, उपन्यास में तारा स्वयं करती है- मेरे भाग्य के कारण देश का बँटवारा हुआ या देश के भाग्य के कारण मेरी दुर्गति हुई।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2009, पृष्ठ-203.
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-1997, पृष्ठ-330-31.
3. यशपाल रचनावली, खण्ड-3 (झूठा सच, भाग-1 'वतन और देश') लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पेपरबैक संस्करण-2007, पृष्ठ-415.
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2009, पृष्ठ-203.
5. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-59.
6. यशपाल रचनावली, खण्ड-3 (झूठा सच, भाग-2 'देश का भविष्य') लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पेपरबैक संस्करण-2007, पृष्ठ-540.
7. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-54.
8. कथा विवेचना और गद्य शिल्प, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1999, पृष्ठ-77-78.
9. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-71.
10. कथा विवेचना और गद्य शिल्प, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1999, पृष्ठ-75.
11. अधूरे साक्षात्कार, नेमिचन्द्र जैन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृष्ठ-81.
12. विवेक के रंग, संपादक- देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1995, पृष्ठ-200.
13. आनन्द प्रकाश लिखित 'झूठा सच' की समीक्षा, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, संपादक- भीष्म साहनी एवं अन्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-1980, पृष्ठ-131.
14. आलोचना के प्रगतिशील सरोकार, शिवकुमार मिश्र, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, संस्करण-2012, पृष्ठ-136-37.
15. हिन्दी उपन्यास रू एक अन्तर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-2004, पृष्ठ-139-40.
16. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-2009, पृष्ठ-71-72.
17. यशपाल रू रचनात्मक पुनर्वास की एक कोशिश, मधुरेश, आधार प्रकाशन प्रा० लि०, पंचकूला, हरियाणा, पेपरबैक संस्करण-2006, पृष्ठ-229.

Corresponding Author

Bhaskar Mishra*

Research Scholar, Visva Bharati University, West Bengal

ravimishra973@gmail.com